॥ ओ३म् ॥

प्रभु से विनय

प्रभु! आपसे सुन्दर कौन हो सकता है? आपसे उत्तम वैज्ञानिक कौन हो सकता है जिसने इस जगत् को रचाया, जिसने इतने बड़े ब्रह्माण्ड का सर्वत्र जीवन मानव शरीर को बना दिया। पिण्ड को ब्रह्माण्ड बना दिया। कैसी सुन्दर विवेचना है, कैसी सुन्दर रचना है आपकी। मैं तो इसको किसी काल में भी नहीं जान पाता। मैं तो यही नहीं जान पाता कि प्रभु! मेरे एक क्षण समय में कितनी तरंगें उत्पन्न होती हैं, श्रोत्रों में कितने शब्दों की उद्बाधता होती है, भगवन् मैं तो सँसार में कुछ नहीं जानता। मुझे तो भगवन्! एक ऐसा मार्ग दीजिए जिससे इस सँसार में मेरे द्वारा विडम्बना न आ पाये क्योंकि सँसार में नाना प्रकार की सुन्दरियों पर जब मेरी प्रवृत्तियाँ चलती हैं तो क्या वह सुन्दरियाँ मेरे लिए सुन्दर बन सकती हैं? किसी काल में सुन्दर बन सकती हैं। मेरे अन्तःकरण में यह सँस्कार जमते चले जायेंगे। वह जो आपने चित्त नाम का क्षेत्र बनाया है क्या उसमें भगवन्! मैं यह बीज बोता ही रहूँगा? यह मैं नहीं बोना चाहता। मैं तो यह चाहता हूँ कि यह जो बीज अँकुर मेरे द्वारा उत्पन्न होते रहते हैं प्रभु! इसका स्रोत ही नष्ट हो जाये और यह स्रोत उस काल में नष्ट होगा जब प्रभु! मैं आपको सर्वस्त्र में दृष्टिपात करूँगा और मौन हो जाऊँगा कि सँसार में कुछ है ही नहीं। प्रभु! मैं तो उस काल में उत्तम बन सकता हूँ, उससे द्वितीय मेरे लिए कोई मार्ग है ही नहीं।

पूज्यपाद-गुरुदेव

अंक : 523 कुल पृष्ठ संख्या समग्र अंक : 598
वर्ष : 44 44 समग्र वर्ष : 50

अनुक्रम

क्रम संख्या	विषय		पृष्ठ संख्या
1.	प्रभु से विनय	पूज्यपाद-गुरुदेव	3
2.	अनुक्रम		4
3.	आध्यात्मिक विज्ञान	पूज्यपाद-गुरुदेव	5-20
4.	याग से योग	पूज्यपाद-गुरुदेव	21-29
5.	ऋषियों के उद्‌गार		30
6.	Creation, and the Institution of National Order	Pujyapad-Gurudev	31-32
7.	दान, पुस्तकों की सूची व प्राप्ति के स्थान तथा सूचना इत्यादि		33-42

नम्र-निवेदन

पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज ने अपने प्रवचनों में वेदमन्त्रों का गान करते हुए उनकी प्रचलित भाषा में व्याख्या की है। उसी अमृत वाणी को जनकल्याण के लिए ''सँहिता'' रूप में प्रकाशित करने के लिए वैदिक अनुसन्धान समिति सभी श्रद्धालु एवम् दानदाताओं से सहयोग के लिए आह्वान करती है जिससे कि प्रकाशन का कार्य सुचारू रूप से ऊर्ध्वा गति को प्राप्त होता रहे। सहयोग की राशि समिति के बैंक खाते में स्वेच्छानुसार भेजने के लिए बैंक का विवरण निम्न प्रकार से है :-

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)
पंजाब नैशनल बैंक, खान मार्केट, नई दिल्ली
बैंक खाता नं. - 0149000100229389, IFSC Code – PUNB–0014900
website : www.shringirishi.in
Email : contact@shringirishi.in

॥ ओ३म् ॥

आध्यात्मिक विज्ञान

जीते रहो!

देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में उस मेरे देव परमपिता परमात्मा की महती का वर्णन किया जाता है। क्योंकि जिस भी वेदमन्त्र के ऊपर तुम अध्ययन करना प्रारम्भ करोगे उसी वेदमन्त्र में तुम्हें अनन्तता का दीर्घ दर्शन होगा। मानो उस ब्रह्म का दर्शन होता चला जाता है। हमारे यहाँ नाना प्रकार के वैज्ञानिक हुए हैं। सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके वर्तमान के काल तक नाना वैज्ञानिक हुए परन्तु कोई वैज्ञानिक ऐसा नहीं हुआ जो परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान को सीमाबद्ध कर सके। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा ज्ञान और विज्ञान–मानो वो पूर्णता में रमण करने वाले हैं वो उनका आयतन माना गया है। परन्तु मानव सदैव ऊँची-ऊँची उड़ाने उड़ता रहा है। उस उड़ान उड़ने वालों में नाना ऋषि हुए हैं जिन्होंने बेटा! अपना-अपना मन्तव्य दे करके चले गए, परन्तु अन्तिम चरण में वो मौन हो जाते हैं।

दो प्रकार का विज्ञान हमारे यहाँ प्रायः हमें भासता रहता है। जब भी किसी स्थली पर विद्यमान होते हैं और विचार विनिमय प्रारम्भ होता है तो दो प्रकार के विज्ञान का भास होता है। एक हमारे यहाँ भौतिक विज्ञान है और एक आध्यात्मिक विज्ञान है। परन्तु दोनों प्रकार के विज्ञान को हम वैदिक साहित्य में ले जाते हैं तो वैदिक साहित्य के चिन्तन करने से ये प्रतीत हुआ कि दोनों प्रकार के विज्ञान एक-दूसरे के पूरक कहलाते हैं। मानो एक-दूसरे में वे समावेश होते रहते हैं।

जिस भी काल में ऋषि-मुनियों ने, मानो मनन करने वालो ने ये मनन किया कि ये भौतिक विज्ञान और आध्यात्मिक विज्ञान क्या है? तो बेटा! समय-समय पर अपना-अपना दृष्टिकोण ऋषि-मुनियों ने अपनाया।

महर्षि भारद्वाज मुनि का जीवन

जब भारद्वाज के काल में प्रवेश हम करते हैं तो उनके मनन करने का और विज्ञान में रत्त होने के लिये वो सदैव तत्पर रहते थे परन्तु मनन करने का माध्यम बड़ा विचित्र रहा है। एक वेदमन्त्र में आख्यायिका आई उसके ऊपर मनन करना प्रारम्भ किया और उसकी क्रियात्मक मानो भूमिका बनाना प्रारम्भ करते रहते थे। मेरे प्यारे! जहाँ वह भूमिका बनाई अब यन्त्रों में वो परिवर्तित होता रहा है। धातु पिपाद को लेकर के पञ्चीकरण को एक-दूसरे में समावेश करते हुए उन्होंने बेटा! यन्त्रवाद में मानो अपनी उन्नति और अपनी उड़ानें उड़ी हैं। मैंने तुम्हें कई काल में ये प्रकट करते हुए कहा है कि मानव पृथ्वी से उड़ान उड़ करके नाना लोकों में एक ही यन्त्र से उड़ान उड़ता रहा है। परन्तु वह जो आध्यात्मिक विज्ञान है मुझे स्मरण है।

महर्षि काग्भुषण्ड जी और महर्षि लोमश मुनि का महर्षि भारद्वाज मुनि आश्रम में आगमन

एक समय बेटा! महर्षि भारद्वाज मुनि के यहाँ बेटा! अम्रतो भा सम्भवी एक विचारवेत्ताओं की सभा हुई उसमें काग्भुषण्ड और लोमश मुनि ने ये विचारा–लोमश ने कहा कि भगवन्! आज तो हम कजली वनों में भ्रमण करना चाहते हैं और भारद्वाज मुनि के यहाँ कुछ ब्रह्मचारी अध्ययन कर रहे हैं। मानो उस अध्ययन के ऊपर हम भी अपना कुछ विचार विनिमय करना चाहते हैं। महर्षि काग्भुषण्ड और महर्षि लोमश दोनों ने वहाँ से गमन किया। भ्रमण करते बेटा! कजली वनों में महर्षि भारद्वाज मुनि के आश्रम में पहुँचे। भारद्वाज मुनि ने बेटा! अपने आसन को त्याग करके और ब्रह्मवेत्ताओं को नतमस्तिक हो करके उन्हें उचित आसन प्रदान किया। मानो उनका अतिथि करने के पश्चात् कहा कहो

भगवन्! ये मेरा बड़ा अहो-भाग्य है जो ब्रह्मवेत्ताओं का मुझे दर्शन हो रहा है। मेरे प्यारे! काग्भुषण्ड जी ने कहा ऋषिवर हम कुछ विचार-विनिमय करने के लिये आये हें। उन्होंने कहा प्रभु विचार-विनिमय तो होना चाहिए। भारद्वाज मुनि ने कहा कि विचार तो हमारा एक अङ्ग बन गया है और **विचार-विनिमय करते हम अपने में महान् बनना हमारी एक उत्कट इच्छा बनी रहती है।** तो आओ भगवन्! कुछ विचार-विनिमय करें।

महर्षि भारद्वाज मुनि और महर्षि काग्भुषण्ड जी व महर्षि लोमश मुनि का विचार-विनिमय

मुनिवरो! देखो उस समय काग्भुषण्ड जी ने ये कहा प्रभु हमने ये श्रवण किया है कि आपके यहाँ विज्ञान का कोष और मानो देखो उसकी उड़ान बड़ी विचित्र उड़ी जा रही है। भौतिक विज्ञान में आपकी जो गति है वह सराहनीय है क्योंकि दर्शनों में जिसको हम अध्ययन करते रहे हैं। वेदमन्त्रों में जिसकी विचारधारा हमारे मस्तिष्कों में प्रायः आती रही है। परन्तु उन विचारधाराओं में हम रत्त हो करके और ये चिन्तन भी करते रहते हैं कि भौतिक विज्ञान एक मानव की मौलिक सम्पदा कहलायी जाती है। तो ये विज्ञान आपकी और हमारी सबकी सम्पदा है क्योंकि विज्ञान के क्षेत्र में हम सब प्राणी रमण कर रहे हैं, उनका पञ्चीकरण हो रहा है तो परन्तु उनके मस्तिष्कों का जो एक उद्धृता आ रही है, महानता आ रही है ब्रह्मचारी अपने ब्रह्मबर्चोसी का पालन करते हुए ब्रह्मचरिष्यामि बन रहे हैं। ये सब हमारा एक मानो देखो मौलिक क्रियाकलाप कहलाता है। तो क्या भगवन् हम ये जानना चाहते हैं भारद्वाज–क्योंकि आपके यहाँ ब्रह्मचारी सुकेता और शबरी और ब्रह्मचारी कवन्धि और रोहणीकेतु नाना ब्रह्मचारी अध्ययन प्रायः करते रहते हैं, उनकी ऊँची उड़ान, नाना प्रकार की चित्रावलियों का दर्शन भी होता रहा है और उस दर्शन में हम ये भी अपने में अनुभव करते हैं कि जो मानव अपनी स्थली से उड़ान उड़ता हुआ वह

लोक-लोकान्तरों की उड़ान उड़ता है वह अग्नेय को अपना शरीर, अग्नेय को अपनी प्रतिभा बना करके ही मानो देखो उड़ान उड़ता रहता है। परन्तु हम एक समय ऋषिवर भारद्वाज मुनि से उन्होंने कहा कि एक समय हम भ्रमण करते हुए वैशम्पायन ऋषि के द्वार पर गए थे। तो वैशम्पायन ऋषि महाराज और हम भ्रमण करते हुए मानो उद्दालक गोत्रीय ऋषियों के द्वार पर पहुँचे जो उद्दालक गोत्र के ऋषिवर अपनी एक यज्ञशाला में कुछ निर्माण, कुछ यन्त्रों की धारा में रत्त हो रहे थे। तो वह मानो अपने पूर्वजों के क्रियाकलाप को अपने यन्त्रों में दृष्टिपात कर रहे थे। तो मानो भगवन् ये विज्ञान की उड़ान है। आपके यहाँ भी प्रायः ऐसे ही यन्त्र हैं।

अणु और परमाणु का विभाजन

परन्तु देखो जहाँ अणु और परमाणुओं का और उनका विभाजन किया जाता है, ये भी बड़ा विचित्र है। तो मुनिवरो! देखो भारद्वाज मुनि महाराज ने अपने ब्रह्मचारी सुकेता से कहा, हे ब्रह्मचारी सुकेता जाओ **परमाणु कृतिका यन्त्र** को लाया जाए। तो वह मानो देखो परमाणु कृतिका यन्त्र को लाए और उन्होंने एक परमाणु को लिया और परमाणु का जब यन्त्र में विभाजन हुआ तो जितना ये ब्रह्माण्ड है इस ब्रह्माण्ड का सर्वत्र मानो चित्र, चित्रों से मानो देखो उस परमाणु में उन्हें दृष्टिपात हो रहा है। तो मेरे प्यारे! विज्ञान अपने में बड़ा विचित्र मानवीय मस्तिष्कों में खिलवाड़ करता रहा है और नृतिका में नृत्य करता रहा है। मेरे पुत्रो! महर्षि भारद्वाज मुनि ने कहा क्या प्रभु ये कोई आश्चर्य नहीं है क्या अपने पूर्वज अन्तरिक्ष में जो शब्द के साथ में चित्र रमण कर रहे हैं मानो देखो वो चित्र नहीं आ सकते, हमारे यहाँ तो इस प्रकार का यन्त्र है क्या जिस यन्त्र में एक परमाणु से ही, एक परमाणु में ब्रह्माण्ड का हम दर्शन करते रहते हैं। मेरे प्यारे! देखो उस समय भारद्वाज मुनि के इन वाक्य को, वैज्ञानिक तथ्यों को दृष्टिपात करते हुए काग्भुषण्ड जी और लोमश मुनि आश्चर्य चकित हो गए।

आध्यात्मिकवाद और भौतिकवाद में अन्तर्द्वन्द्व

मेरे पुत्रो! देखो काग्भुषण्ड जी ने कहा प्रभु हम आपसे कुछ प्रश्न करना और चाहते हैं। उन्होंने कहा क्या चाहते हैं भगवन्? उन्होंने कहा कि हम आध्यात्मिक विज्ञान को और जानना चाहते हैं। ये तो आपका भौतिक विज्ञान है–पूर्वजों का दर्शन होना, एक परमाणु में विभाजन करने से ब्रह्माण्ड का चित्र दृष्टिपात होना और ये तो सब भौतिक विज्ञान कहलाता है। मानो देखो एक-एक रक्त के बिन्दु में, चित्रावलियों में मानव का दिग्दर्शन होना ये भी एक मानो देखो विज्ञान भौतिकत्व में रत्त रहता है। हम ये जानना चाहते हैं भगवन् आध्यात्मिकवाद और भौतिक विज्ञान में कौन-सा अन्तर्द्वन्द्व है, मानो देखो आध्यात्मिकवाद किसे कहते हैं और भौतिक विज्ञान किसे कहते हैं?

पञ्चीकरण का स्वरूप

मेरे प्यारे! देखो हमारे यहाँ ऋषि-मुनियों ने अपनी-अपनी उड़ान जैसी उनकी उड़ान थी वैसे उन्होंने उड़ना प्रारम्भ किया। उन्होंने कहा प्रभु आप क्या जानना चाहते हैं? तो महर्षि लोमश मुनि ने ये कहा भारद्वाज मुनि से क्या प्रभु ये जो पञ्चीकरण कहलाता है क्या ये एक-दूसरे को नष्ट भी कर सकता है? तो मुनिवरो! देखो ऋषि ने ये कहा क्या ये मानो देखो जैसे अग्नि है, जल है, पृथ्वी है और वायु और अन्तरिक्ष, परन्तु एक-दूसरे के पूरक बन जाते हैं परन्तु एक-दूसरे के जो गुण हैं इन्हें वो नष्ट नहीं कर सकते। किसी भी काल में जल जहाँ ओतप्रोत हो गया है, जल अपनी सूक्ष्म मानो वो अदिति की धारा को धारण कर लेता है जब जिस काल में भी जल ने अपने मानो देखो अपने वरण रूपों को धारण कर लिया है तो वो अग्नि स्वरूप बन जाता है। परन्तु देखो अग्नि अपने में जल में भी अग्नि बन करके मेरे पुत्रो! वह अग्निस्वरूप बनी रहती है परन्तु अस्तित्व को समाप्त नहीं कर सकती। ये जो पाँचों तत्व हैं एक-दूसरे के पूरक कहलाते हैं। एक-दूसरे में भासते रहते हैं, एक-दूसरे में प्रतिभाषित होते रहते हैं परन्तु अपने

में वो अपनेपन में मानो निहित रहते हैं। तो मेरे प्यारे! देखो लोमश जी ने इन वाक्यों को स्वीकार कर लिया।

परन्तु काग्भुषण्ड जी ने प्रश्न किया कि महाराज ये आध्यात्मिकवाद क्या है? उन्होंने कहा जहाँ ये पञ्चीकरण रहता है और पञ्चीकरण में भी आत्मा का दर्शन करने लगता है तो मानो देखो वहाँ से आध्यात्मिकवाद की प्रारम्भता होती है। जैसे मानो पञ्चमहाभूत हैं और पञ्चमहाभूत अपने-अपने अस्तित्व को समाप्त नहीं कर सकते, अपने गुणों को गुणाधानम् मानो वो गुणों को अपने गुणों को अपने में धारण करते रहते हैं। परन्तु देखो जब हम ये विचारते हैं कि आध्यात्मिकवाद का इससे क्या समन्वय रहता है तो विचार आता है, वेद के मन्त्र आते हैं परन्तु हमारा चिन्तन करने का माध्यम हमारे समीप आने लगता है क्या उनमें भी हम चेतना को भासने लगते हैं। जब मानो देखो उन पञ्चीकरण में कोई चेतना क्रिया-कलाप कर रही है, कोई क्रिया-कलाप हो रहा है। हमारे मानव शरीर में मानो एक आत्मा पञ्चीकरण को धारण करके इस शरीर को इस शरीर का अस्तित्व बनाये रहती है। परन्तु जब चेतना का और उन मानो पञ्चीकरण दोनों का विच्छेद हो जाता है तो मानो देखो आत्मा अपने स्वरूप का भिन्न बन जाता है चेतना के रूप में और ये पञ्चीकरण अपने रूपों में रत्त रह करके अपने रूपों को प्राप्त होता रहता है। तो मानो देखो वह हम विचारते हैं कि उन पञ्चीकरण में, उस भौतिकता में मानो एक चेतना क्रिया-कलाप कर रही है जिस चेतना का नामोकरण हमारे ऋषि-मुनियों ने बेटा! देखो आध्यात्मिक अथवा आत्मा से सम्बन्धित किया है।

अन्तःकरण का साक्षात्कार

मेरे प्यारे! देखो आध्यात्मिकवादी जो प्राणी हैं वो इस विज्ञान में नहीं जाना चाहते हैं, वो इस विज्ञान से मानो उपराम बन जाते हैं और वो उपराम कैसे बनते हैं ये बड़ा विचित्र एक गहन गम्भीर एक

रहस्यतम कहलाया जाता है। मानो देखो जब तक हमारा जो चित्त मण्डल बना हुआ है, हमारे इस मानव शरीर में मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार कहलाते हैं। ये चतुष का नामोकरण मानो अन्तःकरण कहलाता है। ये अन्तःकरण जब मानो देखो अपने में भासित–मुझे तो कुछ ऐसा स्मरण है भारद्वाज मुनि ने ये कहा कि एक समय मेरे जो महापिता थे–मेरे पिता का नाम रेगणी भारद्वाज था। मानो मेरे महापिता का नाम शोभनी भारद्वाज था। मेरे मानो चतुष भारद्वाज का नामोकरण स्वाति था। तो मेरे जो महा चौथे जो मानो मेरे महापिता स्वाति थे एक समय उन्हें जिज्ञासा जागी क्या मैं सोमरस को पान करना चाहता हूँ। मैं सोम को अपने में धारण करना चाहता हूँ जिस सोम से मेरा विच्छेद हो गया है। तो मानो उन्होंने यह विचारा कि मैं मानो देखो अहिंसा परमो धर्मी बनूँ। तो अहिंसा परमो धर्म की वे जब अपने में धारा को अपनाने लगे तो मेरे पुत्रो! देखो वहाँ तक चले गये क्या वे प्रत्येक वस्तु में जब अहिंसा का भान करने लगे, भान करते-करते वहाँ चले गये कि वायु में जो पोषक तत्व थे वो प्राण के द्वारा मानो अपनी उदरपूर्ति का एक साधन बनाने लगे। तो मुझे ऐसा मेरे पिता ने वर्णन कराया क्या स्वाति जो मेरे महापिता थे वो पिच्चासी वर्षों तक एकन्त स्थली पर विद्यमान हो करके ब्रह्मत्व ब्रह्म में आभाहित हो करके, मौन रह करके मानो उन्होंने ये सिद्ध किया कि अहिंसा परमो धर्म क्या है? मानो देखो अहिंसा परमो धर्म क्या है और देखो ये भी निश्चय किया कि चतुष अन्तःकरण में जो संस्कारों का प्रादुर्भाव हो रहा है मुझे इन्हें मानो देखो कहीं समाप्त करना है। वे जब मानो अहिंसा परमो धर्म के मानो साधन और उसकी प्रतिक्रिया को बनाते-बनाते बेटा! वायु से अपने पोषक तत्वों को लेने लगे परन्तु अपने में रत्त हो करके परिणाम ये हुआ कि मुनिवरो! पिच्चासी वर्षों के तप करने से (105) एक सौ पाँच वर्ष का तप किया और एक सौ पाँच वर्ष का इस प्रकार तप करके मानो उन्हें वो जो चतुष अन्तःकरण बना हुआ उसकी प्रतिक्रियाएँ उन्हें साक्षात्कार हो गई।

परमानन्द का दर्शन

मेरे प्यारे! देखो यहाँ ये जितने भी अभ्रूत कहलाए जाते हैं वहाँ मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार ये तीनों, ये जो चतुष है ये भी तिताञ्जलीय बन जाता है। वो तिताञ्जलीय जब बन जाता है तो मानो देखो केवल एक रस रह जाता है। उस एक रस में न तो बुद्धि रहती है, न मनस्तत्त्व रहता है और न मेरे पुत्रो! अहंकार और देखो न उसमें सुचिता रहती है। मानो देखो एक रस रह करके चेतना, चेतना का जब समावेश हो जाता है। चेतना चेतना में जब रत्त हो जाता है तो मानो देखो वे ज्ञानादि सम्भवा परिवाचक प्रतिलोकाः मानो देखो ऐसी वेद की आख्यायिका कहती है क्योंकि वो केवल एक मानो ज्ञान और प्रयत्न दोनों ये मानो एक प्राणत्व के प्रकृतित्व की दोनों की प्रतिक्रिया उस आत्मा के साथ में मानो देखो उस चेतना में रत्त हो करके भी वो उसमें निहित रहती है। मानो देखो जब वह उसमें निहित हो जाती है तो मेरे प्यारे! देखो अपने आनन्द को वो प्राप्त करता रहता है एक रस बना हुआ, एक रसता का आनन्द अपने में अनुभव करके जितनी भी हमारी ये चित्रावलियाँ हैं अथवा जितना भी अणु में, परमाणु में हम ब्रह्माण्ड का दर्शन करते हैं वो मानो देखो अपने में ही ब्रह्म को, अपने में उस ब्रह्माण्ड को अपना आयतन स्वीकार करते हैं। वह उनको अनुभव हीं नहीं होता कि वो तो उनका आयतन बन गया है। जहाँ आयतन का मानो प्रसंग आता है वहाँ मानव मानो देखो किसको ये कहे कि मैं इसमें रत्त हो गया हूँ। मानो जहाँ तक इसकी परिक्रमा का सम्बन्ध है जब मानो जो ब्रह्माण्ड एक रस रहने वाला कण-कण में विद्यमान है वो उसका अनुभव कर रहा है वहाँ परिक्रमा का भी मानो निषेध हो जाता है। तो मेरे प्यारे! देखो जहाँ तक परिक्रमा का सम्बन्ध है वो मानव के ब्रह्मरन्ध्र तक रहता है। वो प्राण और मन की जहाँ तक साधना होती है वहाँ तक मुनिवरो! देखो परिक्रमा का सम्बन्ध होता है।

मुझे ऐसा स्मरण आया है–बहुत पुरातन काल हुआ पुत्रो! काग्भुषण्ड जी और लोमश मुनि का दोनों के सम्वाद में भी ये आता

रहा है और भारद्वाज के विज्ञानशाला में क्रियात्मक भी दृष्टिपात किया गया है। मानो देखो वे प्राण और मन की क्योंकि मन जो है ये सूक्ष्म इस प्रकृति का सूक्ष्मतम तन्तु माना गया है परन्तु ये जो प्राणत्व है ये ब्रह्माण्ड का अथवा ब्रह्म का, ब्रह्माण्ड का भी नहीं ये ब्रह्म का मानो देखो प्रतिनिधित्व करने वाला है। जब मानो दोनों की प्रतिभा एक रूपों में रत्त हो जाती है तो मानो जब ये परिक्रमा में रत्त होते हैं। जब तक ये मानो एक रस नहीं हुए हैं दोनों का विभाजन हो गया है। मन मानो प्राण के ऊपर अश्वस्थ होकर के जब ये भ्रमण करता है तो ये जो ब्रह्माण्ड हमें दृष्टिपात आ रहा है—मैंने ब्रह्माण्ड की चर्चा करते हुए कल तुम्हें बहुत-सा वर्णन कराया था। परन्तु नाना निहारिकाएँ, आकाश गंगाएँ मानो सौर मण्डलों की चर्चाएँ कल हुईं। जो मानो देखो प्रकाश अपने में रत्तम् बृही है। मानो देखो जब प्राण और मन दोनों इसी ब्रह्माण्ड की परिक्रमा करते हैं तो बेटा! ऐसा मुझे ऋषि-मुनियों से प्रतीत हुआ है, पूज्यपाद गुरुदेव के चरणों में विद्यमान हो करके ऐसा कुछ भान हुआ है क्या मानो देखो एक अरब पिचानवें करोड़ नवास्सी लाख और दस हजार पाँच सौ बावन समय बेटा! देखो इस ब्रह्माण्ड की वो एक अखण्ड समय में परिक्रमित हो जाता है। तो ऐसा मानो देखो ये ऋषि-मुनियों से प्राप्त हुआ। परन्तु देखो जब ऋषि इस प्रकार के अन्वेषण में लग गए, अन्वेषण करने लगे तो बेटा! उन्होंने ब्रह्माण्ड को मापने का प्रयास किया और ब्रह्माण्ड को मानो अपने ही इस अन्तःकरण में मेरे पुत्रो! देखो मापने लगता है जहाँ तक अन्तःकरण की प्रतिभाषिता कहलाती है। जहाँ तक अन्तःकरण की सीमा कहलाती है वहीं मेरे पुत्रो! देखो यह चतुष अन्तःकरण बन करके इस प्रकृति को मापता रहता है। जहाँ मुनिवरो! देखो मन का, बुद्धि का और चित्त और अहंकार का अस्तित्व जहाँ समाप्त हो जाता है वो परमानन्द को प्राप्त हो करके बेटा! तब तो उसका ये ब्रह्माण्ड आयतन बन जाता है। वहाँ न परिक्रमा का सम्बन्ध होता है। वहाँ तो केवल एक केवल्य

मानो चेतना में चेतना का भान होता रहता है। वो उसका आयतन स्वीकार करके अपने में महानता का दिग्दर्शन करता रहता है।

आध्यात्मिकवाद और भौतिकवाद का स्वरूप

बेटा! मैं बहुत दूरी चला गया हूँ विचार देता हुआ, विचार तो कुछ और ही चल रहा था। परन्तु देखो मैं काग्भुषण्ड और लोमश मुनि इत्यादियों की चर्चा में हम जा रहे थे। विचार ये हो रहा था कि आध्यात्मिकवाद और भौतिक विज्ञान क्या है। मेरे पुत्रो! देखो भौतिक विज्ञान जहाँ तक मन, बुद्धि अपनी सीमा को बद्ध कर देती है वहाँ तक भौतिकवाद कहलाता है और जहाँ मुनिवरो! देखो बुद्धि, मन लुप्त हो करके चित्त के मण्डल में, चित्त अहंकार के मण्डल में प्रवेश हो करके एक ही सूत्रीय क्रिया-कलाप बन करके प्राण में रत्त हो जाते हैं वहाँ परिक्रमा का समन्वय हो जाता है। और जहाँ ये दोनों आत्मा से मिलान करके मानो देखो केवल्य आत्मा बन करके प्रकृतिवाद समाप्त हो गया, चैतन्यवाद की प्रतिभा में वो भाषित हो जाता है उसे बेटा! आध्यात्मिकवाद कहते हैं। मेरे पुत्रो! देखो आध्यात्मिकवाद और भौतिक विज्ञान दोनों अपने में एक-दूसरे के पूरक कहलाते हैं। जहाँ से भौतिक विज्ञान मानो देखो समापन हो जाता है वहाँ आध्यात्मिकवाद का प्रारम्भ हो जाता है। मेरे प्यारे! हमारे ऋषि-मुनियों की एक बड़ी विचित्र देन रही है क्योंकि ऋषि-मुनियों ने इस विज्ञान को जिस भी काल में उन्होंने निहारा तो अपने अन्तःकरण आन्तरिक जगत से इसको निहारने का प्रयास किया। जिस काल में भी ऋषि मुनि इस विज्ञान को मानो देखो अपने अन्तःहृदय से अन्तःहृदय में झाँक करके मानो देखो इसमें झरोखो में सृष्टि अन्तःकरण में दृष्टिपात करेंगे, उसको बाह्य जगत में लाना प्रारम्भ करेंगे वो विज्ञान मुनिवरो! देखो संसार का **सार्थक विज्ञान** बन करके रहता है। और जिस भी काल में वैज्ञानिकों ने इस बाह्य जगत से ही विज्ञान को जाना है, मानो एक परमाणु को जाना, एक परमाणु को जान करके द्वितीय परमाणु उपस्थित हो गया है। एक धारा को

जाना द्वितीय धारा उपस्थित हो गयी है तो वैज्ञानिक मुनिवरो! उन्हीं धाराओं का निराकरण करता-करता अन्त में बेटा! देखो दूसरा जन्म ले लेता है, उसमें पुनः लग जाता है। मानो तृतीय जन्म ले लेता है उसमें पुनः लग जाता है।

इन्द्रियों का विज्ञान

मेरे प्यारे! देखो वह भौतिक विज्ञान को तय नहीं कर पाता। वो उसकी सीमा को नहीं पा पाता। परन्तु देखो आध्यात्मिक जो विज्ञान जो आन्तरिक जगत से ही विज्ञान को जानते हैं–**पञ्चीकरण में मानो सर्वत्र संसार का विज्ञान निहित रहता है।** एक मानव ने बेटा! अपने श्रोत्रों के ऊपर अन्वेषण करना प्रारम्भ किया। अन्वेषण करता-करता बहुत दूरी चला गया। अन्वेषण करता-करता मेरे प्यारे! दिशाओं में रमण करने लगा। दिशाओं में चला गया और वो आन्तरिक मानो उन्होंने श्रोत्रों से दिशाओं को जाना उन दिशाओं में कितने आवान्तर भेदन हैं, कितने परमाणु हैं, कितने लोकों की रचना हो रही है, कितनी धाराएँ कितनी दूरी पर रमण कर रही हैं। रजोगुणी धारा कितनी दूरी पर जा करके वो अपने में रत्त रहती है। सतोगुणी कहाँ रहती है, तमोगुणी कहाँ रहती है तो ये सब भान उसे मानो देखो श्रोत्रीय इन्द्रियों के विज्ञान को जानने से प्राप्त हो जाता है। मानो देखो इसी प्रकार देखो वाणी है इस वाणी के उद्गार उच्चारण करता-करता बेटा! वो बहुत दूरी चला जाता है। मानव वाणी को विचारता है मेरी कटु वाणी से क्या लाभ हुआ है। मानो उसके लाभ-हानि में चला जाता है, उससे भी उसे त्याग करके उपराम होता है। मैं सत्य उच्चारण करता हूँ तो उसमें क्या लाभ है? मानो उसमें भी और ऊर्ध्वा में जाता है। जब सत्य में रमण करता है वाणी से विचारता है क्या मेरा एक शरीर है इस शरीर के मानो अङ्ग-सङ्ग नाना प्राणी तुझे पान करना चाहते हैं। जितने भी विषैले प्राणी हैं वे सब तुझे पान करना चाहते हैं। मानो देखो सर्पराज है, सिंहराज है, विच्छेतक राज है नाना प्रकार के जो प्राणी

विषैले हैं ये तुझे पान करना चाहते हैं। ऐसा कौन-सा मैं क्रियाकलाप कर सकता हूँ जिससे मैं उपराम हो जाऊँ। तो मानो वह उस समय वाणी के ऊपर अनुशासन करता हुआ और **वाणी से पाँचो इन्द्रियों पर अनुशासन हो जाता है।** उस सबको जब मानव मित्र की दृष्टि से दृष्टिपात करता है तो मानो देखो वे उसके चरणों में ओतप्रोत हो जाते हैं।

मेरे प्यारे! देखो मुझे बहुत-सा काल स्मरण आता रहता है। जब हम अपने पूज्यपाद गुरुदेव के यहाँ विद्यालयों में अध्ययन करते रहते थे तो मानो देखो एक समय हम पूज्यपाद के द्वारा पहुँचे तो वो सामगान गा रहे थे। जहाँ कोई प्राणी नहीं था मध्य रात्रि का काल था तो वो गान जब गाया जा रहा था तो सिंहराज उनके चरणों की वन्दना कर रहा है, सर्पराज उनके चरणों की वन्दना कर रहा है, नाना विषैले प्राणी उनके अंग-संग विद्यमान हैं। मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कहा प्रभु! ये क्या, इसमें क्या मूल है? क्या तात्पर्य इसका हम इसको नहीं जान पाए। उन्होंने कहा हे पुत्र! जब मानव अपनी वाणी को, अपने उद्गारों को इतना महान् बना लेता है क्या उन उद्गारों का सम्बन्ध प्रभु से हो जाए तो ये भी प्राणी इनमें एकोकी आत्मा, मानो देखो वो आत्मा हैं जो ज्ञान की पिपासी हैं। और वो सत ज्ञान से जब वेद के मन्त्रों में प्रभु के ज्ञान से मानो वाणी का समन्वय होता है तो मानो देखो ये क्योंकि ये भी उस वाणी के वे इच्छुक बने हुए हैं और कौन अभागा ऐसा प्राणी है जो अपने माता-पिता की प्रशंसा नहीं चाहता है। मेरे प्यारे! ये अपने पिता की जब वह प्रभु की प्रशंसा होती है, प्रकृति की प्रशंसा होती है तो मानो देखो जब वाणी उद्गार बन जाती है, उद्गम बन करके, विवेकी बन करके, अहिंसा परमो धर्मी बन करके जब मानो देखो वह परमाणु प्रमाणित होते हैं, ओतप्रोत होते हैं तो मानो देखो हिंसक प्राणी भी अपनी हिंसा को त्याग देता है। तो मेरे प्यारे! देखो ऋषि ने, जब मानो मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने ये वाक्य प्रकट कराया तो मेरा अन्तर्हृदय गद्गद् हो गया।

ऋषि-मुनियों का रहस्यत्तम विज्ञान

विचारा कि ऋषि मुनि बेटा! यहाँ से अपने विज्ञान को प्रारम्भ करते रहते थे तो इस विज्ञान में हिंसा नहीं होती थी। मानो देखो यन्त्रों का निर्माण करते, यन्त्रों में भ्रमण करते रहते। मानो देखो जैसे घ्राणइन्द्रिय है। वे मुनिवरो! देखो वो जल और पृथ्वी को देवता बना करके अनुसन्धान करते। मानो देखो एक में कोई देवता है, एक में पृथ्वी देवता है तो एक में वायु देवता है, दोनों का अन्वेषण कर रहे हैं। ऋषिवर विचार विनिमय कर रहा है। विचारता हुआ याग के समीप जा करके मानो देखो वहाँ यन्त्रों का निर्माण करता है। तो मेरे प्यारे! इसी प्रकार हम जब चक्षुओं के द्वार पर जाते हैं। मेरी प्यारी माता का चक्षुओं से हम दिग्दर्शन कर रहे हैं। दिग्दर्शन करते-करते हम मानो सूक्ष्म परमाणुओं को दृष्टिपात करने लगते हैं। यह अग्नि का अवधान कहलाया गया है, अग्नि की मानो धाराएँ इसे धारित करने लगती हैं और करती-करती एक समय वो आता है वैज्ञानिक अपने नेत्रों से यन्त्रों का निर्माण करता हुआ वह अग्ने अस्त्रों का निर्माण करता है। मानो अग्नेय चित्रावलियों का निर्माण करता है और निर्माण करता वह एक समय बेटा! नेत्रों के ऊपर अन्वेषण करता-करता इतनी दूरी चला जाता है कि वह सर्वत्र ब्रह्माण्ड का चित्रण इसके समीप आना प्रारम्भ हो जाता है। मानो देखो भिन्न-भिन्न प्रकार की अग्नियाँ मानो इसके समीप आ जाती हैं। वह कौन-सी अग्नि है बेटा! कोई बड़वानल नाम की अग्नि है। मुनिवरो! देखो कोई मानो देखो वैश्वानर नाम की अग्नि है, कोई प्रतिभा नाम की अग्नि है, कोई जटा अग्नि है नाना प्रकार की अग्नियों का चयन बेटा! उसे दृष्टिपात आने लगता है। उन परमाणुओं को वो एकत्रित कर लेता है। मेरे पुत्रो! देखो उनको शरीर पर उन परमाणुओं का लेपन यदि कर ले तो मेरे पुत्रो! देखो अग्नि में उसका दाह भी नहीं होता।

विचार-विनिमय क्या बेटा! मैं विज्ञान के इस रहस्यतम मानो देखो तत्वों में मैं जाना नहीं चाहता था पुत्रो! परन्तु तुम्हारी जो ये प्रेरणा

है, तुम्हारा जो ये विचार है इनका भी कुछ शोधन करना बहुत अनिवार्य है। विचार-विनियम केवल हमारा क्या है कि बाह्य पुरातन मानो ऋषि-मुनियों ने इस **भौतिक विज्ञान को आन्तरिक जगत से दृष्टिपात करने जब लगते हैं तो बेटा! उसमें सार्थकता होती है।** और जब वैज्ञानिक बेटा! अग्नि को बाह्य जगत में दृष्टिपात करता है–कहीं काष्ठों में जा रहा है, कहीं समुद्रों में प्रवेश कर रहा है इसमें कैसी अग्नि लग गई है, मानो कहीं अन्तरिक्ष में ये कैसे परमाणु एक-दूसरे से मानो देखो अमृत होते हुए ये अग्नि प्रदीप्त हो गई है। बेटा! देखो सूर्य में कई समय अग्नि का प्रहार हो जाता है, चन्द्रमा में भी कई काल में अग्नि प्रदीप्त हो जाती है। परन्तु मंगल में भी कई काल में अग्नि प्रदीप्त हो जाती है, पृथ्वी में भी अग्नि प्रदीप्त हो जाती है। तो मैं अग्नियों के सम्बन्ध में बेटा! बहुत चर्चा करना नहीं चाहता हूँ केवल विचार-विनिमय हमारा ये है कि हम परमपिता परमात्मा की जो महानता है उसके ऊपर हम विचार दे रहे थे क्या बेटा! ये जो मानव का शरीर है इसका निर्माण माता के गर्भ में हुआ है देवताओं की सहायता के द्वारा परमात्मा मानो विश्वकर्मा बन करके निर्माण कर रहा है। और जो मानव इस मानव तत्व को अच्छी प्रकार जान लेता है वो भौतिक और आध्यात्मिक विज्ञान दोनों की आभा में रत्त हो करके मानो अपने में आनन्द को ग्रहण कर लेता है।

महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज के विज्ञान का दिग्दर्शन

मेरे पुत्रो! आज का हमारा विचार, मैं कोई व्याख्याता नहीं हूँ केवल तुम्हें संक्षिप्त परिचय देने चला आया हूँ और वह परिचय क्या है कि हम परमपिता परमात्मा के विज्ञान को, मेरे प्यारे! काग्भुषण्ड जी और महर्षि लोमश मुनि महाराज महर्षि भारद्वाज मुनि के यहाँ बेटा! अन्वेषण की दृष्टि से विचार-विनिमय करते थे वहाँ तक उनका विचार-विनिमय होता रहा। नाना प्रकार का जो विज्ञान था भारद्वाज के यहाँ उसे दृष्टिपात करते रहते थे। बेटा! एक यन्त्र ऐसा उनके यहाँ

था एक मानव एक स्थली पर विद्यमान है परन्तु वो प्रस्थान कर गया है। ढाई घड़ी के पश्चात् बेटा! देखो वो यन्त्र उस मानव का चित्र ले लेता था। एक यन्त्र ऐसा है क्या मानो एक रक्त का बिन्दु है उस रक्त के बिन्दु को यन्त्र में प्रवेश करो और मानो देखो उसी मानव का जिसका रक्त का बिन्दु है उसी का साक्षात्कार दर्शन हो रहा है। मेरे प्यारे! देखो वह एक यन्त्र ऐसा भारद्वाज के यहाँ था जिस यन्त्र में अपने मानो देखो पचासवें महापिता तक के मानो प्रायः यन्त्रों में दर्शन होते रहते थे। उनके मानो देखो शब्द अन्तरिक्ष में हैं और वे शब्द और क्रियाकलाप मानो देखो यन्त्रों में साक्षात्कार आते रहते थे। एक यन्त्र ऐसा था बेटा! जो मानो देखो ब्रह्मचारी सुकेता, कवन्धि, शबरी और रावण के विधाता कुम्भकरण मानो देखो इनकी सहकारिता से इनके ही मानो देखो वाङ्मय में उसका निर्माण हुआ जो बेटा! बहत्तर लोकों का एक ही यन्त्र भ्रमण करता रहता था। मेरे प्यारे! देखो इस प्रकार का यन्त्र भारद्वाज के यहाँ याग हो रहा है याग में मानो देखो परीक्षण हो रहा है क्या देखो कोई यजमानम् ब्रह्मे होताजन की प्रवृत्ति अशुद्ध तो नहीं बन गई वो प्रायः मानो देखो इस पृथ्वी लोक तक रहती है। जिसकी वाणी में, स्वाहा में आत्मीयता रहती है, सुहृदय रहता है उसके चित्र बन करके द्यौ लोक को जाते थे वो यन्त्रों में दृष्टिपात आता रहता था। मेरे प्यारे! इस प्रकार के यन्त्रों का निर्माण प्रायः हमारे यहाँ होता रहा है।

प्रभु का विज्ञान नितान्त है

आज मैं बेटा! इस सम्बन्ध में विशेष तुम्हें विवेचना देने नहीं आया हूँ। परन्तु ये जितना विज्ञान मानव जाना है ये सब प्रभु के विज्ञान में से एक सूक्ष्म-सी कड़ी है, मानो सूक्ष्मता है। उसका विज्ञान बड़ा नितान्त है जो मानो मानव उसको जानने के लिए तत्पर होता है तो जाना नहीं जाता। बेटा! मानव शरीर का निर्माण किया है उसमें कहीं बुद्धि का निर्माण है, कही मनस्तत्त्व है, कहीं अहंकार हैं, कहीं मानो चित्त की

प्रतिभा का और उस चित्त का सम्बन्ध मेरे प्यारे! अन्तरिक्ष से समावेश कर दिया है प्रभु ने। ये देव कितना महान् है। बेटा! मेरे शरीर में, हमारे शरीरों में बेटा! कहीं मानो देखो कहीं हृदयों का निर्माण किया–एक हृदय लघु-मस्तिष्क में रहता है, एक हृदय अनुष्ठान स्थली पर रहता है परन्तु दोनों हृदयों का समन्वय अपने परमात्मा के हृदय से समन्वय हो गया है। मेरे प्यारे! कैसा विचित्र मेरा प्रभु है।

मुनिवरो! देखो इसके उपरान्त अभूत जब और विचार-विनिमय करते रहते हैं तो बेटा! अनन्तता दृष्टिपात आती रहती है। बेटा! देखो मन का सम्बन्ध प्रकृति से, प्रकृति के सूक्ष्म तन्तुओं से प्रतिभाषित कर दिया। **चित्त का मण्डल भी प्रकृति का मण्डल है जहाँ संस्कार निहित होते हैं।** मेरे पुत्रो! मानव शरीर में भी चित्त का मण्डल है जहाँ करोड़ों-करोड़ों जन्म के सँस्कार निहित होते हैं और ऋषि मुनि बेटा! अनुसन्धान करते रहते हैं। जन्म-जन्मान्तर समाप्त हो जाते हैं परन्तु वह उससे उपरामता को जब तक प्राप्त नहीं होता जब तक हम शून्य बिन्दु एक रस जो प्रभु है बेटा! उसको उससे मिलान नहीं कर सकते। तो मेरे प्यारे! देखो प्रभु कितना महान् वैज्ञानिक है–माता के गर्भ में एक बिन्दु प्रवेश हुआ है उस बिन्दु के प्रवेश होते ही मेरे प्यारे! देखो चन्द्रमा उसे अमृत देने लगता है, सूर्य प्रकाश देने लगता है, वायु प्राण देने लगती है, अग्नि मानो देखो .....

शेष अनुपलब्ध

दिनाँक : 13 अक्टूबर, 1984
समय : दोपहर 2 बजे
स्थान : चौ. ब्रजराज सिंह
ग्राम खतोला,
मुजफ्फरनगर

॥ ओ३म् ॥

याग से योग

जीते रहो!

देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परा से ही उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में उस मेरे देव जो सँसार का नियन्ता है अथवा निर्माण करने वाला है उस देव की प्रतिभा का वर्णन किया जाता है। क्योंकि वह मेरा देव यह जो जितना भी जगत् दृष्टिपात आ रहा है यह सर्वत्र ब्रह्माण्ड के एक-एक कण में व्याप्त रहता है। वह मेरा प्यारा प्रभु इस पृथ्वी के कण-कण में ओत-प्रोत है। आओ, आज हम उस अपने देव की महिमा का गुणगान गाते चले जाएँ। क्योंकि हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर देव की महिमा का गुणगान गाया जाता ही रहता है। क्योंकि वह परमपिता परमात्मा अनुपम है। वह दृष्टिपात नहीं होता। परन्तु उसके साकार स्वरूप का जब हम दृष्टिपात करते हैं, **यह सँसार जो दृष्टिपात आ रहा है यह उस मेरे ब्रह्म का साकार रूप ही माना गया है।** क्योंकि उसी की चेतना से यह जगत् हमें चेतनित दृष्टिपात आता है।

याज्ञिक बनने की प्रेरणा

परन्तु आजका हमारा वेदमन्त्र हमें यह वाक्य प्रकट नहीं कर रहा है। आजका हमारा वेद का मन्त्र कह रहा है हे मानव तू सँसार में दार्शनिक बन, अपने स्वतः मानवत्व का दर्शन करने वाला बन। क्योंकि प्रत्येक मानव परम्परागतों से ही इस मानवीय दर्शन के ऊपर चिन्तन करता चला आ रहा है। आज नहीं बहुत परम्परागतों से ही मानव अनुसन्धान करता रहा है अथवा आत्मा के ऊपर भिन्न-भिन्न प्रकार की

मानव की उड़ान सदैव रहती रही है। प्रत्येक मानव उड़ान उड़ता रहा है कि उस प्रभु की प्रतिभा को प्राप्त करने के लिए और उसके साकार और निराकार स्वरूप दोनों का निराकरण करने के लिए वह यह विचारता रहा है कि मैं उसके सम्बन्ध में कुछ जानने के लिए तत्पर रहूँ।

बेटा! हमारे यहाँ एक उद्दालक गोत्र विशाल गोत्र रहा है उसमें नाना ऋषि इस प्रकार के हुए हैं जिनकी बहुत विचित्र उड़ान रही है इस सँसार में। क्योंकि वैज्ञानिकता में भी और आध्यात्मिकवाद दोनों में उड़ान रही है। परन्तु आज मैं तुम्हें आध्यात्मिक विज्ञान और भौतिक विज्ञान में तो विशेष ले जाना नहीं चाहता हूँ परन्तु विचार-विनिमय क्या? आजका हमारा वेदमन्त्र यज्ञों के ऊपर अपना विचार अथवा अपनी आभा प्रकट कर रहा है। हे मानव! तू याज्ञिक बन। जहाँ मानव दर्शन के सम्बन्ध में, मानवीयता के सम्बन्ध में विचार विनिमय होता रहा वहाँ याज्ञिक बनने का भी प्रसंग आता रहा। प्रत्येक मानव याज्ञिक बन रहा है और बनता रहता है। मुझे स्मरण आता रहता है, हमने तुम्हें कई काल में वर्णन भी कराया है।

भगवान् कृष्ण और महाराज अर्जुन का सम्वाद

हमारे यहाँ भगवान् कृष्ण और अर्जुन का सम्वाद आता रहता है। एक समय बेटा! भगवान् कृष्ण और अर्जुन दोनों समुद्र के तट पर विद्यमान थे। दोनों का वैज्ञानिक तथ्यों के ऊपर विचार-विनिमय हो रहा था। भगवान् कृष्ण नाना प्रकार के वैज्ञानिक यन्त्रों में प्रवेश कर रहे थे। उन्होंने एक ऐसे यन्त्र का निरीक्षण किया था जिसको वायु में रमण करने मात्र से सूर्य की किरणों को वह यन्त्र निगलता था। सूर्य की किरणों को निगल करके द्यौ अथवा विद्युत इस सूर्य में विद्यमान है जिस विद्युत से, जिस प्रकाश से वह इस रात्रि को अपने में धारण कर लेता है अथवा चन्द्र के प्रकाश को अपने में धारण कर लेता है। वही भगवान् कृष्ण का यन्त्र उस प्रकाश को निगल रहा था और क्योंकि वह द्यौ का जो प्रतिनिधि माना गया है। हमारे यहाँ सृष्टि के प्रारम्भ में अथवा

सृष्टि के गर्भ में कुछ ऐसा माना जाता है कि सूर्य द्यौ का एक प्रतिनिधि है। क्योंकि द्यौ से यह प्रकाश लेता है और उसी प्रकाश को ले करके यह रात्रि को अपने में धारण कर लेता है। चन्द्रमा के प्रकाश को कान्तिमय बना करके प्रकाश में ले जाता है। वही प्रकाश जो चन्द्रमा को अपने में धारण करने वाला हो रात्रि को अपने गर्भ में प्रवेश कराने वाला हो। वही भगवान् कृष्ण का यन्त्र था जो **सूर्यकेतु यन्त्र** कहलाता था। वह यन्त्र सूर्य की किरणों को निगल रहा था और निगल करके रात्रि में उस यन्त्र से प्रकाश लिया जाता था। वही प्रकाश मेरे प्यारे! भगवान् कृष्ण ने अपने यन्त्रों में स्थिर कर दिया। उसी यन्त्र में और नाना प्रकाश के यन्त्रों का विकास किया जा रहा था। वह यन्त्र वायु मण्डल में त्याग दिया जाए तो वायु को दूषित भी कर रहा था। उस समय भगवान् कृष्ण ने कहा, हे अर्जुन! एक प्रकार का यन्त्र मैंने स्थिर किया है जो सूर्य की किरणों को धारण करने वाला अथवा निगलने वाला यन्त्र है। मेरा यन्त्र पच्चीस राष्ट्रों के प्राणियों को वायुमण्डल में त्यागते उनके उनके प्राणों का हरण कर सकता है।

मेरे प्यारे! जब भगवान् कृष्ण ने ऐसा कहा तो अर्जुन ने कहा जब यह वायुमण्डल इतना दूषित हो जाएगा, वायुमण्डल में इतना दूषितपन आ जाएगा तो प्रभु उसके शोधन करने का भी आपके द्वारा उत्तर कृति भी होनी चाहिए। शोधन करने की क्षमता भी होनी चाहिए। तो उस समय भगवान् कृष्ण ने कहा, हे अर्जुन! इस प्रकार वायु मण्डल दूषित हो जाता है, पृथ्वी के गर्भ से खनिज को वैज्ञानिक अपने में धारण कर लेते हैं अथवा राष्ट्र की सम्पदा बना करके उसे वायु में त्याग करके वायु-मण्डल दूषित हो जाता है। प्राण-घातक बन जाता है। उस समय हम क्या करते हैं? उसको शोधन करने के लिए हम उस समय याग करते हैं और अग्नि में घृत को प्रवेश करते हुए, अग्नि में सूक्ष्म रूप बना करके वायुमण्डल में प्रवेश करा देते हैं और वह वायुमण्डल में जितने भी दूषित परमाणु हैं उनको वह परमाणु निगलते रहते हैं और वायुमण्डल शुद्ध बनाते रहते हैं अथवा निर्माण करते रहते हैं।

विचार-विनिमय क्या? मेरे प्यारे! वेद का ऋषि कहता है, वेद का मन्त्र कहता है हे मानव! तू याज्ञिक बन। तू दूषित कर्म न कर, याज्ञिक बन और याग कर्म करने वाला बन। मेरे प्यारे! उस समय **भगवान् कृष्ण ने यही कहा था हमें याग करना चाहिए। मैं याग करता रहता हूँ।** वह याग की प्रतिक्रिया भी जानते थे। याग एक ऐसा कर्म है इस सँसार में प्रायः महान् माना गया है। हमारे ऋषि-मुनि परम्परागतों से ही याग कर्म करते रहे हैं। जहाँ भी गुरु-शिष्य का सम्वाद आता है, गुरु-शिष्य एकान्त स्थली में विद्यमान हो करके याग करते हैं। **याग क्यों करते हैं?** क्योंकि याग से वायुमण्डल पवित्र बनता है। गृह में पवित्रता आती है और वायुमण्डल को शोधित किया जाता है। हमारे यहाँ वैज्ञानिक तथ्यों में ऐसा माना है कि शब्दों के साथ में मानव के चित्र चित्रण करते रहते हैं। वायुमण्डल में जितने भी शब्द विद्यमान हैं।

याज्ञिक विज्ञान

मुझे स्मरण आता रहता है, पुत्रो! एक समय महर्षि सोमकेतु के द्वारा ब्रह्मचारी कवन्धि पहुँचे और कहा कि महाराज क्या कर रहे हो? उस समय सोमकेतु को अनुसन्धान करते हुए बारह वर्ष हो गए थे और वह एक विषय पर अनुसन्धान कर रहे थे कि हमारे इस मानव शरीर में जो चित्त है जिसमें बाल्य से युवा काल तक के यन्त्र रूप में सँस्कार विद्यमान हैं जिन्हें हम सँस्कार कहते हैं अथवा मानव को ध्यानावस्थित होते ही मानव के चित्र समीप आ जाते हैं वह मानव हो या न हो। तो उन चित्रों का वह चित्रण कर रहे थे। सोमकेतु ने कहा, हे ब्रह्मचारी कवन्धि! मैं अपने जन्म-जन्मान्तरों के चित्रों पर अनुसन्धान कर रहा हूँ। जैसे मानव के शरीर के जो चित्र होते रहते हैं, हम स्वप्नावस्था में नाना प्रकार की स्वप्नावस्था को प्राप्त होते रहते हैं परन्तु उनमें चित्र आते रहते हैं उन चित्रों का मैं चित्रण करना चाहता हूँ अथवा उनको दृष्टिपात करना चाहता हूँ। जब उन्होंने ऐसा कहा तो ब्रह्मचारी कवन्धि भी उसी कार्य में रत्त हो गए और वह अनुसन्धान

करने लगे। विचार करते-करते बेटा! उन्हें बारह वर्ष तक अनुसन्धान और याग करते हो गए। यागों के द्वारा वह चित्रों को अपने में धारण और प्रवेश स्थित कर रहे थे। उसी के द्वारा वह अपनी आभा को प्राप्त हो रहे थे। विचार-विनिमय क्या? मुनिवरो! हमारे ऋषि-मुनि परम्परागतों से अनुसन्धान करते रहे हैं और यागों के ऊपर उनका विशेष अधिपत्य रहा है। **याग मानव का जीवन है।** महर्षि सोमकेतु ने तो यहाँ तक कहा है कि ऋषियों को योग में ले जाने वाला याग है।

याग कहते हैं देवताओं को प्रसन्न करना। देवता प्रसन्न कैसे होते हैं? हमारे इस मानव के शरीर में पञ्च-महाभूत विद्यमान हैं और वह हमारे देवता कहलाते हैं। परन्तु पञ्च-महाभूतों का शोधन करना केवल सुगन्ध के द्वारा हो सकता है। वह याग के द्वारा हो सकता है। वह देवता जब मानव से प्रसन्न हो जाते हैं तो मानव देवता बन जाता है। आत्मा का लोक पवित्र बन जाता है। **जब आत्मा का लोक पवित्र बन जाता है तो मानव योग की अवस्था में प्राप्त होने लगता है।** योग को प्राप्त करने लगता है। योग सिद्ध आत्मा हो जाती है। योग को अपने में सिद्ध कर लेता है।

बेटा! यह कैसा विचित्र विज्ञान है? आज मैं कौन से विज्ञान में चला गया हूँ। आज मैं याज्ञिक विज्ञान में चला गया जहाँ योगी अपने जन्म-जन्मान्तारों के चित्रों को चित्रण करता है अथवा उन्हीं के द्वारा वह विज्ञान को प्राप्त करता है। आध्यात्मिक विज्ञान और भौतिक विज्ञान दोनों का समन्वय करता है। दोनों का समन्वय करके एक-एक शब्द के ऊपर वह अनुसन्धान करता है। एक-एक शब्द पर अनुसन्धान करता हुआ अपने जीवन को महान् और पवित्रवाद में ले जाता है। मेरे प्यारे! विचार-विनिमय क्या? आज हम याज्ञिक बनें। जिससे हमारा जीवन पवित्र बन जाए और हमारे जीवन में एक यौगिकता आ जाए। क्योंकि यौगिकता उसी काल में आती है जबकि हमारा जीवन महान् और आभा में परणित करने वाला बन जाता है।

भगवान् राम का याज्ञिक जीवन

मुझे स्मरण आता रहता है, मैं ऋषि-मुनियों की वार्ता प्रकट कराता रहता हूँ। मुझे स्मरण आती रहती हैं वह वार्ताएँ जब याग करने से मानव षोडश कलाओं का बुद्धिमान, जानने वाला बनता है। मुझे स्मरण है त्रेता के काल में जब भगवान् राम वशिष्ठ के द्वारा पहुँचे। विद्यालय में जब प्रवेश कराए गए तो भगवान् राम को प्रथम वशिष्ठ ने याग की प्रतिक्रिया वर्णित कराई। राम ने उसी प्रतिक्रिया को ले करके, उसी याग को ले करके उन्होंने अपने जीवन में षोडश कलाएँ जो मानव में, सुषुप्ति में रहती हैं उनको जागरूक करने का प्रयास किया। भगवान् राम बेटा! बारह कलाओं के जानने वाले कहलाते थे और वह 12 कलाएँ जिनको धारण करने वाले भगवान राम ने राष्ट्र, समाज और अपने जीवन को महान् बनाने का प्रयास किया।

मुझे स्मरण आता रहता है उनका जीवन बेटा! वह घ्राण के द्वारा इस पृथ्वी को सुगन्धित करने से उन्हें इतना ज्ञान होता था कि इतनी दूरी पर इतना खनिज विद्यमान है। मुनिवरो! जब इस विद्या को प्राप्त करने के पश्चात् महर्षि भारद्वाज मुनि के द्वारा जब भगवान् राम पहुँचे, विश्वामित्र उनके सहित हैं। जब वह महर्षि भारद्वाज मुनि के द्वार पहुँचे तो उन्होंने कहा कहो राम! आज कैसे आसन को पवित्र किया? उन्होंने कहा, प्रभु! मैं कुछ वैज्ञानिक तथ्यों को जानने के लिए आया हूँ। उन्होंने वैज्ञानिक तथ्यों को जानने के लिए प्रयास किया और प्रयास करने के पश्चात् उन्होंने **अहिल्याकेतु व्रणीत** नाम के यन्त्र का निर्माण किया, जो ब्रह्मचारी सुकेता, ब्रह्मचारिणी शबरी द्वारा उन्होंने वैज्ञानिक तथ्यों को जाना और यन्त्र का निर्माण किया जिस यन्त्र में इस पृथ्वी से दस-दस योजन दूरी गर्भ की वार्ता का यन्त्रों में चित्रण आ जाता था। उस यन्त्र में चित्र आ जाता था कितनी दूरी पर कौन सा खनिज है और कौनसी धातु को कहाँ पर नृत्य कर रही है? भगवान् राम ने उसी धातु को जानने का अथवा निकासने का प्रयास किया। उन्होंने अपनी विज्ञानशाला दण्डक बन में जहाँ मुनिवरो! महर्षि विश्वामित्र ने धनुर्याग किया था,

उसी धनुर्याग की स्थली पर याग किया और उन्होंने बेटा! यन्त्रों के द्वारा पृथ्वी के खनिजों को जानने का प्रयास किया।

मेरे प्यारे महानन्द जी ने मुझे एक समय वर्णन कराया था कि आधुनिक काल में कहते हैं कि अहिल्या के उद्धारक भगवान् राम थे। **अहिल्या क्या थी?** अहिल्याकेतु नाम के यन्त्र का उन्होंने निर्माण किया था जिससे भूमि में कौनसी खनिज कहाँ विद्यमान है और भूमि को महान् बनाने के लिए उसका उपयोग करना, खनिजों को पाना और खाद्य पदार्थों को पान कराना, राष्ट्र को सम्पन्न बनाना यह भगवान् राम की विशेषताएँ थीं। उन्होंने भारद्वाज मुनि आश्रम में नाना प्रकार की विद्याओं का अध्ययन किया। वर्षों राम उनके आश्रम में विद्या अध्ययन करते रहे और विश्वामित्र भी धर्नुविद्या देते रहे। परिणाम उसका यह हुआ कि उन्हें प्रवीण बनाया गया।

बेटा! कैसा विचित्र काल था उस समय। भारद्वाज मुनि महाराज के यहाँ एक यन्त्र का निर्माण किया गया था जिस यन्त्र का नाम **चन्द्र भानु कृति विश्लेष यन्त्र** था। चन्द्रमा के गर्भ में जितने खनिज थे उन सब खनिजों को जानकर के उनके चित्र वह पृथ्वी में भारद्वाज की विज्ञानशाला में उसके चित्र आते रहते थे और उसके खनिज आते रहते थे क्योंकि **स्वर्ण की मात्रा चन्द्र मण्डल में विशेष मानी गई है। चन्द्रमा में तम्भ्रेतकेतु नाम की धातु का निर्माण विशेष होता रहा।** उस सबके चित्र आते रहे और वैज्ञानिकजन, वहाँ उनका यातायात बना रहा। मैं विज्ञान के युग में जाना नहीं चाहता हूँ। **विचार तुम्हें यह दे रहा हूँ मेरे पुत्रो! इन सब कार्यों के लिए सबसे प्रथम हमें याग करना चाहिए।** हमें याज्ञिक बनना होगा। **याज्ञिक कौन कहलाता है?** बेटा! जो अपने मस्तिष्क से कार्य करता है। जो बुद्धि को कुशल बनाता है, महान् बनाने का प्रयास करता है। तो विचार-विनिमय क्या? भगवान् राम कैसे वैज्ञानिक थे? बारह कलाओं को जानने वाले थे। कलाएँ किसे कहा जाता है? यह बेटा! तुम्हें मैं कल वर्णन करूँगा। जो भगवान् राम

बारह कलाओं को जानते थे उसका विश्लेषण तो मैं कल ही कर पाऊँगा।

आजका विचार तो केवल इतना ही है कि भगवान् राम आठ वर्ष की अवस्था से याग करते थे और वह वेदों को ध्वनि रूपों में गाते रहते थे। एकान्त स्थली पर विद्यमान हैं, वशिष्ठ के चरणों में हैं परन्तु वेद का गायन चल रहा है। रात्रि समय जब भी राम को दृष्टिपात करते वह गान ही गाते दृष्टिपात होते थे। मेरे प्यारे! माता कौशल्या का जीवन भी सफल था। एक समय भगवान् राम से महर्षि व्रतेन्तु ने कहा था हे राम! तुम हर समय गाते रहते हो। इसका कारण क्या है? यह विद्या तुम कहाँ से प्राप्त करते हो? भगवान् राम कहते हैं माता ने मुझे इस योग्य बनाया है। ऋषियों की कृपा से मेरी माता ने मुझे पाया है, प्राप्त किया है। मैं सदैव उस महान् देव का गायन गाता रहता हूँ जिसने वेद जैसी पवित्र विद्या इस सँसार में प्रकाशित की है, उसको पान करता रहता हूँ। आभा में रमण करता रहता हूँ। उसी में मेरी प्रतिष्ठा बनी रहती है। क्योंकि माता ने मेरा निर्माण किया है। मुझे आभा से युक्त बनाया है। इसलिए मैं सदैव उसको जानने के लिए तत्पर रहता हूँ। ऋषि व्रतेन्तु मौन हो गए और उन्होंने कहा धन्य है भगवन्। भगवान् राम का जीवन आठ वर्ष से याज्ञिक बना और तुम्हें स्मरण होगा जब वन में चले गए तो वहाँ भी याग चलता था। समिधाओं के द्वारा अग्नि प्रदीप्त हो रही है। परमाणुवाद से शुद्ध किया जा रहा है।

याज्ञिक बनने की पुनः से प्रेरणा

इसीलिए मुनिवरो! विचार क्या? आजका हमारा वेद-मन्त्र कह रहा था हे मानव! तू याज्ञिक बन। तू कैसा याज्ञिक बन? तेरे श्वास की गति भी याग में परणित हो जाए। तेरी मानवीयता का स्वरूप द्वितीय रूप बन करके यज्ञ के रूपों में सुगन्धि बन करके रहे। भगवान् राम कहा करते थे कि गान गाना चाहिए और गान कैसा हो? आत्मा से

प्रसन्न युक्त हो। जो मानव प्रसन्न होता है और याज्ञिक होता है वह मेरे प्यारे! प्रभु से मिलाप करता है। यह है बेटा! आजका वाक्य। विचार यह देने के लिए आया हूँ कि प्रत्येक मानव को याज्ञिक बनना चाहिए। भगवान् कृष्ण अर्जुन दोनों याग की कल्पना कर रहे हैं। विज्ञान के ऊर्ध्वा स्वरूप में जाना चाहते हैं याग के द्वारा। राम जाना चाहते हैं याग के द्वारा। **याग ही एक शब्द है जो मानव के हृदय को व्यापक बनाता है।**

यह है बेटा! आजका वाक्य। कल मैं बारह कलाओं का वर्णन करूँगा जो भगवान् राम ने यागों के द्वारा जिनको प्राप्त किया। आजका वाक्य यह समाप्त होने जा रहा है। **मानव को सदैव ऊर्ध्वा में जाने के लिए ऊर्ध्वा कर्म करने चाहिएँ। अपनी इन्द्रियों पर संयम करना चाहिए। जिससे मानव धर्म और मानवीयता को जान सके।** यह है बेटा! आजका वाक्य। समय मिलेगा शेष चर्चाएँ कल प्रकट करेंगे।

वेदपाठ. . . . . .
अच्छा भगवन्! आज्ञा
ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः

दिनाँक : 28 सितम्बर, 1981
स्थान : श्री शिव कुमार,
ग्राम धनौरा, मेरठ

॥ ओ३म् ॥

ऋषियों के उद्‌गार

1. एक-एक वेद मन्त्र में विश्व का विज्ञान है।
2. अग्नि, वायु, आदित्य और अङ्गिरा इन चार ऋषियों से वेदों का अवतरण हुआ।
3. वेद वह प्रकाश है जो मानव के अन्तःकरण के अन्धकार को नष्ट करता है।
4. प्रत्येक वेद-मन्त्र 'ओं' रूपी धागे से पिरोया हुआ है।
5. जो आत्माएँ मोक्ष के निकट होती हैं उनमें वेदों का ज्ञान ओतप्रोत रहता है।
6. महर्षि अटूटी (महर्षि शमीक मुनि) थे उनकी आत्मा ने आ करके दयानन्द के शरीर में प्रवेश किया।
7. यह वह भारत भूमि है जहाँ ऋषि-मुनि उस स्थिति में आते हें जहाँ उनके उदर की पूर्ति का कोई साधन प्राप्त नहीं होता।
8. परमात्मा मानव के अन्तःकरण की भावनाओं का आहार करता है और उसी के अनुकूल फल देता है।
9. जो भी हो वह हृदय से हो, पवित्रता से, पवित्र विचारों से हो।
10. जो भी कुछ परमात्मा ने उत्पन्न किया है वह मानव के लिए।
11. विषैले प्राणी भी हैं जैसे सर्प इत्यादि योनियाँ हैं जो सब दुर्गन्ध का शोषण करते रहते हैं। ओर मानव के लिए सुगन्ध उत्पन्न करते हैं।
12. ज्ञान से ही मानव का भविष्य बनता है।
13. अन्त में सबका लक्ष्य यह है कि मानवता को जानो।

Creation, and the Institution of National Order

Rama's Sacrifice Towards Parents

Look sages ! How Rama carried out the orders of his parents. What a great soul he was who set an example of high ideals in the World. How at one moment he was being crowned as a king and how, in another moment, his mother was insisting on his going to the forest and to fulfill his father's command. At that time Rama did not care for his father's separation but stuck to his duty. Rama paid due respects to his parants and to his preceptor Vashistha and left for the forest with his wife Sita and brother Lakshmana.

Mystery of Ahalya's Episode Exploded

O, Sages ! Mahanandji once related to me a story about Ahalya and Gautam wherein Indra is said to have abducted Ahalya and Gautam cursed her and turned her into a stone. At Ahalya's request, asking as to when she would be released from her bondage. Gautama had said that Rama would come in Tretayuga and release her from bondage with a kick of his foot.

O sages ! This narration given out by Mahanand ji is only figurative. According to Vedic terminology, Ahalya means 'earth', 'night' and 'Mother'. In this context of Rama and Ahalya episode, we have to impart the meaning to Ahalya as that of earth i.e. made of stone. I had an opportunity to see Rama in 'Tretayuga' (Treta period). Rama was well-versed in the Science of Earth. People have not weighed this fact that Rama, who was known as the great apostle of ethical codes could not act unethically. Even a kshatriya whose duty is to protect feminine chastity, can not even think of associating with another woman in his imagination. Then how could you expect Rama to kick a woman, so to say, for releasing her from bondage ? The real fact is like this. A piece of fertile land which is not being utilised to produce food and lies fallow and

uneven is called 'Ahalya'. When Rama was proceeding to the forest and crossed Ayodhya, he found the surrounding land fallow and uncultivated. It was not being made use of for production of food. Rama looked at it with a scientific eye and found the land potentially productive and capable of yielding bumper harvest. Nishada's territory lay adjoining Ayodhya. While going to the forest, he happened to be greeted by Nishada. Nishada asked Rama if the former could serve the latter in any way, Rama advised him to tell his farmers to till the land well, sow seeds and raise bumper harvest.

Nishada had asked Rama, "Why do you prefer to go to forest than to rule (Your kingdom) ?" Rama obseved " This is my mother's desire. This life is short and I want to perform some virtuous deeds in my life time. If I live in my kingdom, I shall imbibe 'Rajasic' qualities contrary to my wishes. Whereas if I live in a forest, my life will be austered on account of the very contact with the Rishis.

Did Lakshmana chop off the nose of Ravana's sister ?

O, sages ! When Rama, Lakshmana and Sita were at panchavati, Ravana's sister Somatiti (Surpanakha) came to Rama, Sita and Lakshmana and gave vent to her vicious passions. At that Lakshmana reprimanded, "You ought to be ashamed of your conduct. You are not connected with a low family but on the contrary, you belong to the family of the great king Ravana". With such reproachful words he greeted her and put her to shame. This amounted to cutting of nose and ears. The news of the insulting incident was broken to Ravana, her brother.

It was at this juncture that Khardushana came to retaliate for the maltreatment meted out to Somatiti. In the fight that followed with Rama, he was slain. When that still more depressing news reached Ravana, he alongwith Maricha came and abducted Sita. When Rama and Lakshmana found Sita missing, they felt very sad. They trekked towards Pumpapur.

Pujyapad Gurudev

।। ओ३म् ।।

जन्मदिन की शुभकामनाएँ

श्रीमति देवप्रभा व श्री रामनिवास त्यागी जी, मास्टर जी, निवासी ग्राम माछरा, जिला मेरठ, उत्तर प्रदेश ने अपने सुपौत्र आयुष हिमानिश त्यागी सुपुत्र श्रीमति रुचि व श्री रोहित त्यागी के जन्म दिवस दिनाँक 23 मार्च 2016 के उपलक्ष्य में ग्यारह सौ एक रुपये का सात्विक सहयोग समिति के साहित्य को प्रकाशन करने के लिए उदारता से प्रदान किया है जिसके लिए समिति हृदय से आभार प्रकट करती है।

आयुष हिमानिश त्यागी

त्यागी जी पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज के सम्पर्क में 1959 में आ गए थे और तब से ही लाक्षागृह बरनावा में होने वाले आयोजनों में निरन्तर भाग लेने में सँलग्न हो गए। लाक्षागृह पर होने वाले प्रत्येक याग में अपनी आहुति प्रदान करते हुए अपने परिवार को भी उसमें जोड़कर वैदिक परम्परा से सम्पन्न बनाने में अग्रणीय रहते हैं। उसी श्रद्धा को ऊर्ध्वागति प्रदान करते हुए अपने परिवार की प्रसन्नता के शुभावसर पर अपने भाव अर्पित किए हैं।

श्रद्धालु परिवार को अनुदान के लिए पुनः से आभार व्यक्त करते हुए समिति प्रिय आयुष हिमानिश के प्रथम जन्म दिवस की बारम्बार शुभकामनाएँ देते हुए समस्त परिवार की सुख, शान्ति, दीर्घायु एवम् सर्वतोन्मुखी उन्नति के लिए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है।

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

।। ओ३म् ।।

जन्म दिवस के शुभावसर

सत्यांश त्यागी

प्रज्ञा त्यागी

श्री अभयदेव त्यागी जी निवासी ग्राम खंद्रावली जिला मेरठ, उत्तर प्रदेश ने अपने सुपौत्र प्रिय सत्यांश त्यागी व सुपौत्री प्रज्ञा त्यागी सुपुत्र व सुपुत्री श्रीमति देवप्रिय एवम् सत्यप्रिय त्यगाी के शुभ जन्म दिवस के उपलक्ष्य में इक्कीस सौ रुपए का अनुदान प्रकाशन कार्य के लिए उदारता से प्रदान किया है जिससे कि वैदिक ज्ञान में निरन्तर गति प्रदान करने में अपनी सक्रियता बनी रहे।

अपने क्षेत्र का वैदिक ज्ञान से सम्पन्न यह परिवार जन-कल्याण के कार्य में हमेशा अग्रणीय रहा है और श्री अभयदेव जी के पिता श्री व भ्राता श्री नरदेव जी आज भी विद्वत समाज में अपनी योग्यता व व्यवहार कुशलता के लिए मुख्य स्थान रखते हैं। पूजयपाद-गुरुदेव के सम्पर्क में आने के पश्चात् यह परिवार उनके सभी कार्यों में तन-मन-धन से सँलग्न हो गया और उसी परम्परा का निर्वाह करते हुए निरन्तर समिति के कार्य में अपनी आहुति प्रदान करने में सँलग्न रहता है।

श्रद्धालु परिवार के सहयोग के लिए समिति हृदय से आभार प्रकट करती है और दोनो बच्चों के जन्म-दिवस पर बहुत-बहुत शुभकामनाएँ प्रदान करते हुए समस्त परिवार को दीर्घायु, सुख, शान्ति और सर्वतोन्मुखी समृद्धि के लिए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है।

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

।। ओ३म् ।।

जन्मदिन की शुभकामनाएँ

मास्टर ऋत्विक

श्रीमति ब्रजबाला धर्मपत्नि श्री राजकिशोर त्यागी निवासी ग्राम मकनपुर, जिला गाजियाबाद, उ.प्र. ने अपने प्रिय पौत्र ऋत्विक सुपुत्र श्रीमति अञ्जली एवम् श्री हरिओम त्यागी के जन्मदिवस की शुभ बेला के आगमन पर प्रति वर्ष की भाँति इस वर्ष भी 1100 रु. का सात्विक सहयोग समिति के प्रकाशन के कार्य के लिए प्रदान किया है। त्यागी जी का परिवार पूज्यपाद-गुरुदेव के प्रति अत्यन्त आस्था एवम् श्रद्धा रखता है और उनके प्रवचनों का निरन्तर अध्ययन करते हुए और नित्य दैनिक अग्निहोत्र का अनुष्ठान करते हुए अपने परिवार एवम् सम्बन्धियों को ऊर्ध्व गति में ले जाने में निरन्तर प्रयत्नशील है।

इस परिवार से समिति को व श्री गांधी धाम समिति लाक्षागृह बरनावा को निरन्तर सहयोग प्राप्त होता रहता है जिसके लिए समिति हृदय से हार्दिक आभार प्रकट करती है और प्रिय सुपौत्र को जन्म दिवस की बारम्बार शुभकामनाएँ प्रदान करते हुए परिवार के सभी सदस्यों के लिए दीर्घआयु, सुख शान्ति एवम् सर्वतोन्मुखी समृद्धि के लिए परमात्मा से विनय करती है।

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

।। ओ३म् ।।

श्रद्धा-दान

श्रीमति सरस्वती रघुवंशी व श्री रणवीर सिंह रघुवंशी

कु. कुसुम आर्य रघुवंशी निवासी ग्राम कुतबी, जिला मुजफ्फरनगर, उत्तर प्रदेश ने श्रद्धा स्वरूप अपनी माता श्रीमति सरस्वती रघुवंशी व पिताजी श्री रणवीर सिंह रघुवंशी के चतुर्वेद ब्रह्म पारायण महायाग के शुभावसर पर ऋग्वेद उत्तरार्द्ध की यज्ञशाला लाक्षाग्रह बरनावा पर दिनाँक 13-3-2016 से दिनाँक 20-3-2016 तक यजमान बनने के उपलक्ष्य में ग्यारह सौ रुपए का सात्विक सहयोग प्रकाशन के लिए प्रदान किया है जिसके लिए समिति हृदय से आभार प्रकट करती है।

श्री रघुवंशी जी 25 वर्ष की आयु में ही पूज्यपाद-गुरुदेव के सम्पर्क में आए और उनके साहित्य का अध्ययन करते हुए अपने जीवन को नई दिशा प्रदान की। प्रेरणाओं को ग्रहण करते हुए 50 वर्ष तक अन्न व दूध का अनुष्ठान किया और अनेक बाधाओं व कष्टों के उपरान्त भी आज भी अपने अनुष्ठान में संलग्न हैं? अपने ग्राम में चारो वेदों का यज्ञ करने के साथ-साथ प्रत्येक गुरु-पूर्णिमा पर अपनी पाँचों पुत्रियों व यज्ञ प्रेमियाँ के सहयोग से याग का आयोजन करते हैं। लाक्षागृह बरनावा पर होने वाले वाले प्रत्येक याग में स्वयं अपनी आहुति प्रदान करने के लिए अपने क्षेत्र के अनेक व्यक्तियों को निरन्तर प्रोत्साहित करते हुए इस यज्ञ और साहित्य के ज्ञान से जोड़कर, जन-कल्याण का कार्य बहुत ही लग्न, कर्मठता और उदारता से करने में प्रयत्नशील हैं।

बहुत ही साधारण अपने जीवन को व्यतीत करते हुए अपने जीवन को ऊर्ध्वा में ले जाने में मग्न हैं। ऐसे श्रद्धावान और कर्मठ परिवार के लिए समिति सुख, शान्ति, दीर्घायु व सर्वतोन्मुखी उन्नति की परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है।

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

दानदाता बरनावा में

वैदिक अनुसन्धान समिति के प्रकाशन के कार्य के लिए निम्न याज्ञिक एवम् श्रद्धालु महानुभावों ने अपना सात्त्विक सहयोग प्रदान किया है :

1. श्री ज्ञान चन्द्र महाशय, नरहारा	100 रुपये
2. श्री इन्द्रजीत, मोदीनगर	100 रुपये
3. श्री चन्द्रपाल, खिलवाई	101 रुपये
4. श्री योगेन्द्र, फुगाना	100 रुपये
5. श्री राजेन्द्र शर्मा, रासना, मेरठ	5100 रुपये
6. श्री सुभाष पुत्रश्री तेजपाल, कासिमपुर खेड़ी	1100 रुपये
7. श्री देवप्रिय व सत्यप्रिय त्यागी, शास्त्रीनगर, मेरठ	2100 रुपये
8. श्री देवेन्द्र कलीना, मेरठ	51 रुपये
9. श्री मोहन लाल पहलवान, सरधना	1000 रुपये
10. श्रीमति सरिता, मण्डोली	51 रुपये
11. श्री देवेन्द्र शास्त्री, लाक्षागृह बरनावा	501 रुपये
12. श्री हरिशंकर भारद्वाज, मोदीनगर	100 रुपये
13. श्री आलोक त्यागी, रिचा त्यागी, वसुन्धरा	1100 रुपये
14. मास्टर शिवराज दुष्यन्त, दिनकरपुर	151 रुपये
15. श्री कन्हैया लाल, सरधना	500 रुपये
16. श्री महेश शर्मा, सुल्तानपुर	50 रुपये
17. श्री धर्मवीर सैनी, काकडा, मुजफ्फरनगर	50 रुपये
18. श्री महावीर, बागपत	21 रुपये
19. श्री मूलचन्द, सुराना, गाजियाबाद	1100 रुपये
20. श्री हरद्वारीलाल कश्यप, कासिमपुर, खेड़ी	505 रुपये
21. श्री सलेक चन्द	50 रुपये
22. श्री योगेन्द्र सिंह, बुलन्दशहर	1000 रुपये
23. श्री जयप्रकाश मीना, कालकाजी, दिल्ली	500 रुपये
24. श्री कलीराम त्यागी, दिनकरपुर	500 रुपये
25. मास्टर ऋत्विक त्यागी, मकनपुर	1100 रुपये
26. श्री नाहर सिंह, अखत्यापुर	101 रुपये

27. श्री गमदूर सिंह, फफुन्डा	100 रुपये
28. चौ. साहब सिंह, दाहा	100 रुपये
29. श्री प्रताप सिंह, फफुन्डा	100 रुपये
30. श्री नीरज कुमार, श्री अरविन्द कुमार, शिवकुमार, मोदीनगर	1121 रुपये
31. श्री दुष्यन्त शर्मा, फफुन्डा	100 रुपये
32. श्री अनुज त्यागी, नरगदी, बिजनौर	1100 रुपये
33. श्रीमति रजनी त्यागी, मुजफ्फरनगर	500 रुपये
34. श्री राकेश त्यागी, बाडम	25 रुपये
35. श्रीमति रेखा, हर्रा	500 रुपये
36. श्रीमति बिमला त्यागी, बनखन्डा	101 रुपये
37. श्री रोहित, करनावल	100 रुपये
38. श्रीमति विभा, चण्डीगढ़	500 रुपये
39. श्री सुखवीर, मुलसम	51 रुपये
40. श्री कमल सिंह, मोदीनगर	101 रुपये
41. श्री किशन पाल, मोदीनगर	51 रुपये
42. श्री शीश पाल सिंह, नेहरूनगर, मेरठ	100 रुपये
43. श्रीमति हीरा देवी, हर्रा	101 रुपये
44. श्री ललित त्यागी, पिलखुवा	500 रुपये
45. श्री श्रवण कुमार, बरनावा	50 रुपये
46. श्री अनुज, आर्यन	21 रुपये
47. श्रीमति सुदेश	10 रुपये
48. श्रीमति स्वाति त्यागी, नांरगपुर	500 रुपये
49. श्री जय भगवान, कल्याणपुर	501 रुपये
50. श्री सतपाल पुत्रीश्री भंवर सिंह, काकड़ा	51 रुपये
51. श्री प्रणपाल राना, मुजफ्फरनगर	251 रुपये
52. श्री जितेन्द्र त्यागी, हापुड़	501 रुपये
53. श्री यादराम भमौरी, सरधना	100 रुपये
54. श्रीमति रामेश्वरी देवी, बसन्तपुर सैंतली	200 रुपये
55. श्री नीरज	11 रुपये
56. श्री रोदेश, बरनावा	50 रुपये
57. बेबी सौम्या	200 रुपये

58. स्वाति त्यागी, बरनावा	200 रुपये
59. श्री एस. आर., चण्डीगढ़	250 रुपये
60. श्रीमति सन्तोष चड्ढ़ा, चण्डीगढ़	250 रुपये
61. श्री ओमदत्त, कनौजा	501 रुपये
62. श्री योगेन्द्र कुमार, मण्डी, मुजफ्फरनगर	100 रुपये
63. श्री विभोर, बरनावा	100 रुपये
64. श्री राजकिशोर त्यागी, मकनपुर	500 रुपये
65. श्री ओमवीर, मौहम्मदपुर	100 रुपये
66. श्री अर्पण, कुतोपुर	100 रुपये
67. श्री लोकेश, बरनावा	21 रुपये
68. श्रीमति पूजा, बड़ौत	51 रुपये
69. श्रीमति सरिता, बड़ौत	21 रुपये
70. श्री सुरेश चन्द्र, चन्दियान	50 रुपये
71. श्री रोहण, चन्दियान	50 रुपये
72. श्रीमति कुसुम, सुरेखा, बाडम	100 रुपये
73. कु. कुसम आर्य रघुवंशी, कुतबी, मुजफ्फरनगर	1100 रुपये
74. श्री रामभूल, मीरपुर, मेरठ	50 रुपये
75. श्री सुकराम पाल सुपुत्र श्री जयवीर सिंह, गुरुकुल, नारसन कला, हरिद्वार	100 रुपये
76. श्री भजनलाल, ग्राम छनियालपुर, करनाल	100 रुपये
77. श्री पाल त्यागी, ग्राम धनौरा	500 रुपये
78. श्री हिमानीश, माछरा, मेरठ	1101 रुपये
79. श्री किशनलाल बत्रा, इन्द्री, करनाल (मासिक सहयोग)	605 रुपये
80. श्रीमती कमला देशवाल, ओल्ड राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	501 रुपये
81. श्री एम. टी. रत्ना, करोल बाग	500 रुपये
82. श्री सौरव शास्त्री, बरनावा, बागपत	100 रुपये

सभी उपरोक्त दान दाताओं का समिति हृदय से आभार प्रकट करती है और उनको परिवार सहित जीवन में सुख, शान्ति व सर्वतोन्मुखी समृद्धि के लिए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है।

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

योगनिष्ठ पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज (शृङ्गी ऋषि जी) की अमृतवाणी संहिता के रूप में

*1.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 1)	80.00
*2.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 2)	80.00
3.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 3)	60.00
4.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 4)	60.00
5.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 5)	60.00
6.	Yogic Wisdom of Ancient Rishis	80.00
7.	वेद पारायण-यज्ञ का विधि विधान	25.00
8.	आत्म-लोक	35.00
9.	धर्म का मर्म	40.00
10.	शंका-निवारण	30.00
11.	यज्ञ-प्रसाद अर्थात् यज्ञ का महत्व	40.00
12.	आत्मा व योग-साधना	35.00
*13.	देवपूजा	50.00
14.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 1)	125.00
15.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 2)	125.00
16.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 3)	125.00
17.	रामायण के रहस्य	35.00
18.	यज्ञ एवं औषधि विज्ञान	40.00
19.	महाभारत के रहस्य	30.00
20.	अलङ्कार-व्याख्या	35.00
21.	रावण-इतिहास	50.00
22.	महाराजा-रघु का याग	30.00
23.	वनस्पति से दीर्घ-आयु	35.00
24.	मोक्ष प्राप्ति का मार्ग	35.00
25.	चित्त की वृत्तियों का निरोध	35.00
26.	आत्मा, प्राण और योग	35.00
27.	पञ्च-महायज्ञ	35.00
28.	अश्वमेघ-याग और चन्द्रसूक्त	40.00
29.	याग-मन्जूषा	40.00
30.	आत्म-दर्शन	30.00
31.	पुत्रेष्टि-याग और मातृ-दर्शन	30.00
32.	याग और तपस्या	60.00
33.	यागमयी-साधना	35.00
34.	यागमयी-सृष्टि	35.00
35.	याग-चयन	40.00
36.	दिव्य-रामकथा	120.00
37.	ज्ञान-कर्म-उपासना	35.00
38.	दिव्य-ज्ञान	40.00
*39.	महाभारत एक दिव्य दृष्टि	90.00
40.	महर्षि-विश्वामित्र का धनुर्याग	40.00
41.	आत्म-उत्थान	40.00
42.	तप का महत्व	40.00
43.	अध्यात्मवाद	40.00
44.	ब्रह्मविज्ञान	40.00
45.	वैदिक-प्रभा	35.00
46.	प्रकाश की ओर	35.00
47.	कर्तव्य में राष्ट्र	40.00
48.	वैदिक-विज्ञान	35.00
49.	धर्म से जीवन	35.00
50.	आत्मा का भोजन	40.00
51.	साधना	35.00
52.	त्रेताकालीन-विज्ञान	40.00
53.	यज्ञोमयी-विष्णु	40.00
54.	यौगिक प्रवचन माला भाग-6	80.00
55.	स्वर्ग का मार्ग	40.00
*56.	यौगिक प्रवचन माला भाग-7	80.00
57.	माता मदालसा	50.00
58.	यौगिक प्रवचन माला भाग-8	80.00
59.	यौगिक प्रवचन माला भाग-9	80.00
60.	यौगिक प्रवचन माला भाग-10	80.00
61.	याग एक सर्वाङ्ग पूजा	80.00
62.	यौगिक प्रवचन माला भाग-11	80.00
*63.	यौगिक प्रवचन माला भाग-12	80.00
64.	मानव कल्याण की चर्चाएं	50.00
65.	प्रभु-दर्शन	50.00
*66.	यौगिक प्रवचन माला भाग-13	80.00
67.	समाज उत्थान का मार्ग	50.00
*68.	यौगिक प्रवचन माला भाग-14	80.00
*69.	ब्रह्म की ओर	50.00
70.	ईश्वर मिलन	50.00
71.	यौगिक प्रवचन माला भाग-15	80.00

*सहजिल्द का मूल्य 20 रु. अतिरिक्त है।

यौगिक प्रवचन के स्वामित्व व अन्य विवरण का ब्यौरा फार्म नं. 4 (नियम नं. 8)

1.	प्रकाशन स्थान	: दिल्ली
2.	प्रकाशन अवधि	: मासिक
3.	मुद्रक	: डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश
	नागरिकता	: भारतीय
	मुद्रक का पता	: ए-59, पँचशील एन्कलेव, नई दिल्ली-110017
4.	प्रकाशक	: डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश
	नागरिकता	: भारतीय
	प्रकाशक का पता	: ए-59, पँचशील एन्कलेव, नई दिल्ली-110017
5.	सम्पादक का नाम	: डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश
	नागरिकता	: भारतीय
	सम्पादक का पता	: ए-59, पँचशील एन्कलेव, नई दिल्ली-110017
6.	उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा समस्त पूँजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों।	: वैदिक अनुसंधान समिति (पञ्जी.)

मैं डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं।

डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश

प्रकाशक के हस्ताक्षर

वैदिक अनुसंधान समिति (पञ्जी.)

सी-38, शिवालिक, मालवीय नगर, नई दिल्ली-110017

मासिक सहयोग

श्री हरीराम गुप्ता, केसर स्टील, वजीरपुर, दिल्ली	1000 रुपये
श्री चिंतामणि त्यागी एवं श्री जगमोहन त्यागी बरला, मुजफ्फरनगर	1000 रुपये
श्री संजीव त्यागी (दिनकरपुर) फरीदाबाद, हरियाणा	1000 रुपये
श्री अरुण त्यागी, राजनगर, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	500 रुपये
श्री विनोद त्यागी सुपुत्र श्री जयप्रकाश त्यागी मकनपुर, गाजियाबाद	500 रुपये
मा. कार्तिक त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
मा. लोमश त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
श्री राकेश शर्मा, विराट नगर, पानीपत, हरियाणा	250 रुपये
डॉ. शुचि, डॉ. राजीव चावला, आणद, गुजरात	250 रुपये
श्री कृष्ण लाल बत्रा, इन्द्री, जिला करनाल	201 रुपये
मास्टर कवन्धि, रामप्रस्थ, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	101 रुपये
मास्टर सिद्धार्थ, अँकुर अपार्टमैन्ट, दिल्ली	101 रुपये

पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की ज्ञान गँगा का मासिक पत्रिका ''यौगिक प्रवचन'' में, वैदिक अनुसन्धान समिति द्वारा प्रकाशन किया जाता है और जिस के आजीवन सदस्य बनने के लिए शुल्क 800 रु. और वार्षिक सदस्य बनने के लिए शुल्क 100 रु. है जिसको आप समिति के पते के साथ-साथ निम्न किसी एक पते पर भी डाक द्वारा भेजकर सदस्य बन सकते हैं–

1. डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश, प्रकाशन मंत्री

   ए-59, पँचशील एन्क्लेव, नई दिल्ली-110017, फोन : 011-41030481

2. सुश्री नीरू अबरोल, कोषाध्यक्ष

   K-3, लाजपत नगर,-III, नई दिल्ली-110024 फोन : 011-41721294

3. श्री जितेन्द्र चौधरी, प्रचार मन्त्री

   ए-84, मालवीय नगर, नई दिल्ली-110017, मोबाइल : 9811707343

योगमुद्रा में प्रवचन करते हुए पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज

उद्‌बोधन

हमारे यहाँ भिन्न-भिन्न प्रकार के ऋणों की चर्चा आती है। आज मैं उन ऋणों की चर्चा में जाना नहीं चाहता हूँ, केवल अपने प्यारे प्रभु का गुण-गान गाते हम अपना अध्ययन प्रारम्भ कर देते हैं। प्रायः सभी मानवों का यह कर्त्तव्य हो जाता है–**प्रातःकाल की अमृतमयी वेला में जागरुक हो जाने के पश्चात् प्रभु का चिन्तन करना, उसकी महिमा को विचारना मानव का एक महान कर्तव्य हो जाता है।** आज कोई मानव यह कह रहा है कि मैं किसी प्राणी के लिए यह कार्य कर रहा हूँ या चेतना के लिए ईश्वर तत्व के लिए परन्तु यह नहीं माना जाता। **सँसार में जो भी कर्म करता है वह मानव स्वयं अपने ही लिए करता है। अपनेपन में ही उसे प्रसिद्धि प्राप्त होती है।** अपनेपन में ही उसे नाना प्रकार से उसका आत्म हृदय उसको धिक्कारने लगता है परन्तु जिसका अन्तरात्मा धिक्कारता है उस मानव को ही सँसार में जीने का अधिकार प्राप्त नहीं होना चाहिए। क्योंकि जीवन उन प्राणियों को सदैव प्राप्त होना चाहिए जिनको अपनी आत्मा पर, स्वयँ की प्रवृत्तियों पर विश्वास और श्रद्धा नहीं होती उस मानव का अन्तरात्मा उसको धिक्कारता रहता है परन्तु वह सदैव अपने प्रकृति के आवेशों में आ करके अपनी प्रतिभा को ऐसे प्राप्त कर देता है जैसे सायँकाल के सूर्य की किरणें अस्त हो जाती हैं। मानव का सँसार में एक ही कर्तव्य रहता है कि दुर्गुणों को त्यागना और शुभ कर्मों को अपनाना। यह मानव का विचित्र कर्तव्य होता है। जिनके ऊपर मानव को अध्ययन करना है।

पूज्यपाद-गुरुदेव